8

बालमन के चितेरे : मुंशी प्रेमचंद

स्नेहलता प्रसाद*

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों के पात्र अपनी स्वाभाविकता तथा सरलता के कारण जाने जाते हैं। प्रेमचंद की कहानियों में बालमन का बड़ा ही स्वाभाविक चित्रण देखने को मिलता है। उन्होंने बालमन की कोमल भावनाओं का बखूबी चित्रण किया है। प्रेमचंद की लिखी कहानियों को पढ़ते समय बाल पाठकों को यही लगता है कि इनमें तो उनके मन की बात झलक रही है, वे भी तो ऐसा ही सोचते हैं। प्रेमचंद ने बालहृदय की गहराईयों को स्पर्श किया है। प्रेमचंद की भिन्न कहानियों के बाल पात्र चाहे वह 'ईदगाह' का हामिद हो या 'बूढ़ी नानी' की लाडली या फिर 'कजाकी' का नन्हा बच्चा, सभी की संवेदनशीलता को दर्शाता है यह लेख- बालमन के चितेरे मुंशी प्रेमचंद।

बाल मनोविज्ञान की सटीक परख रखने में निपुण प्रेमचंद के विषय में जो भी कहा जाए, वह अपर्याप्त ही होगा।

प्रेमचंद के बाल पात्रों में से जिस किसी भी पात्र को ले लीजिए आपको ऐसा लगेगा कि उस पात्र से जुड़ी जितनी भी संवेदनापूर्ण बातें हैं, उसकी किसी भी विषय पर जो प्रतिक्रिया है अथवा कब किस स्थिति में उसकी क्या मन:स्थिति हो उठती है या उसके मन में कैसा कौतूहल, जिज्ञासा, गुस्सा, प्यार, नखरा आदि उभर आता है, वह सब कहीं भी ऐसा प्रतीत नहीं होने देता कि यह वर्णन किसी शब्द के जादूगर की कारीगरी है और उसकी वर्णन कौशल की क्षमता है, अपितु यही प्रतीत होता है कि वह पात्र साक्षात् वहाँ है और इस परिस्थिति में उसकी यह स्वत: प्रतिक्रिया है तथा उससे भिन्न किसी और प्रतिक्रिया की आप कल्पना भी नहीं कर पाते। फलस्वरूप आप उस पात्र के साथ एकाकार हो उसी रंग में डूबने-उतराने लगते हैं और इसी को तादात्म्य स्थापित होने की स्थिति कहा गया है। एक बार पाठक उस पात्र के साथ तादात्म्य स्थापित हो जाने पर हर पल उसी पात्र के रूप में स्वयं की भावनाओं को जीवंत करने लगता है।

उदाहरणस्वरूप स्कूलों के पाठ्यक्रम में बार-बार पढ़ाए जाने वाले 'बड़े भाई साहब'

* *प्रोफ़ेसर* (अवकाश प्राप्त), भाषा शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली

को ही ले लीजिए। एक ओर छोटे भाई की चंचलता और खेल के प्रति प्रेम, दूसरी ओर बड़े भाई के प्रति मन में घुमड़ते अनर्गल प्रश्नों को बार-बार पीछे ढकेलने पर भी उसका मन फिर-फिर घुमड़ती अपनी असहायता को सहज रूप में अभिव्यक्त करता है, तो वहीं 'बड़े भाई' की मनोदशा का चित्रण प्रेमचंद बखूबी करते हैं। 'बड़ा भाई' बड़ा है क्योंकि वह बड़ा है पर वस्तुतः वह भी किशोरावस्था की ओर बढ़ता हुआ एक बच्चा ही है, जिसे छोटे भाई का 'आदर्श' बनने के लिए अपने बचपन की इच्छाओं का गला घोंटकर हर समय किताब खोले बैठे रहना पड़ता है पर बेबस मन कनकौवों के साथ उड़ान भरता रहता है। वह इस डर से न पूरी नींद सोता है, न खुलकर हँसता-बतियाता है कि छोटा भाई भी कहीं उन्हीं बातों का अनुकरण कर गुमराह न हो जाए। यदि राम के मर्यादा पुरुषोत्तम की महिमा से मण्डित होकर जहाँ साधारण मानव मन की इच्छाओं पर प्रतिबंध लगा, अपने कर्तव्यों पर बलि देने और प्रजा हेतु अपने सुखों का गला घोंटना पड़ता है तो वहीं प्रेमचंद के 'बड़े भाई साहब' भी बड़े भाई की मर्यादा का उल्लंघन न हो जाए, इस डर से अपनी बाल आकांक्षाओं का गला घोंट देते हैं। एक 'आदर्श' स्थापित करने के लिए वह कैसे अपने बालमन की इच्छाओं का दमन करता है और कैसे वह घुटन भरा जीवन जीने को मजबूर है। यह एक कुशल मनोवैज्ञानिक दृष्टि से आँका गया अद्‌भुत चित्रण है।

कैसे परिस्थिति बच्चे को बड़ा-बूढ़ा और बड़े-बूढ़े को बच्चा बना देती है, यह ईदगाह कहानी में हामिद और अमीना के पात्रों के माध्यम से उकेरा गया है। जिस बच्चे को हम नज़रअंदाज़ कर उससे अपना कष्ट नहीं कह पाते। वह बच्चा बच्चा होते हुए भी सब कुछ अपनी आँखों से देखता और अपनी बुद्धि से परिस्थितियों को समझता है। असहाय होने के कारण कुछ कर पाने में असमर्थ वह बच्चा अवसर आने पर अपने तीन पैसे के साम्राज्य से अपनी आँखों देखी घर की कठिन परिस्थिति का मुकाबला मेले में जाकर एक चिमटा खरीद अपनी दादी की जलती अँगुलियों को जो शीतलता प्रदान करता है, वह शायद वास्तविक साम्राज्य का मालिक भी उस गहरी संवेदना से अपने प्रिय का कष्ट निवारण न कर पाए। उसके कष्ट को समझने, परखने की यह आंतरिक संवेदना ही अमीना को एक बच्ची बना देती है और हामिद को एक सूझ-बूझवाला, घर-परिवार की चिंता करने वाला बूढ़ा।

बच्चों की विभिन्न परिस्थितियों में, विभिन्न मनोवृत्ति को दर्शाने में सक्षम प्रेमचंद का कोई भी पात्र उनकी किसी भी रचना से लें चाहे वह 'दूध का दाम' का हो या 'गुल्ली डंडा' का, कहीं भी आपकी प्रतिक्रिया कहानी के चित्रण से भिन्न नहीं होगी। बालमन का कौतूहल कैसे-कैसे जोखिम उठाकर अपनी सूझ के अनुसार कार्य करने को प्रवृत्त करता है। यह 'नादान दोस्त' कहानी के माध्यम से बताई गई है, जहाँ बच्चों की जिज्ञासा, कल्पनाशीलता और सूझ-बूझ का

परिचय मिलता है। कहानी से यह तथ्य भी समझ में आ जाता है कि प्रकृति की अपनी व्यवस्था है उसमें व्यवधान का परिणाम प्राय: हानिकारक या दु:ख का कारण ही होता है। यह बात घोंसले के अंडों को छूने और चिड़िया द्वारा उन्हें गिराकर नष्ट करने के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है।

पशु-पक्षियों के प्रति बच्चों में सहज प्रेम की प्रवृत्ति 'मिट्ठू' कहानी में देखने को मिलती है। 'मिट्ठू' के प्रति आकृष्ट हो गोपाल उसे खरीदकर अपने साथ रखना चाहता है। उसे उसके पिंजरे में न पा बेचैन हो इधर-उधर ढूँढ़ता है और तभी चीते से उसे बचाते हुए मिट्ठू के घायल होने पर रोने लगता है। यह घटना बालमन के साथ-साथ पशु-पक्षियों के भावों को भी बखूबी दर्शाती है। प्रेम की भाषा सभी समझते हैं। फिर उस प्रेम की रक्षा हेतु चीते का सामना करने को पल भर की देरी किए बिना ही 'मिट्ठू' गोपाल को बचाने के लिए कूद पड़ता है। बच्चों के सरल मन में पशु-पक्षियों के प्रति ही नहीं, अपितु घर के बड़े-बूढ़ों एवं सहायकों के प्रति भी सहज प्रेम होता है। 'बूढ़ी काकी' कहानी में काकी की उपेक्षा देखते हुए कहानी में वर्णित बालिका लाडली काकी का अपनी समझ और सामर्थ्यानुसार ख्याल रखती है।

प्रेमचंद लाडली के प्रेम को अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं–'लाडली को काकी से अत्यंत प्रेम था। बेचारी भोली लड़की थी। बाल विनोद और चंचलता की उसमें गंध न थी। दोनों बार जब उसके माता-पिता ने काकी को निर्दयता से घसीटा, तो लाडली का हृदय ऐंठकर रह गया। वह झुँझला रही थी कि यह लोग काकी को क्यों बहुत-सी पूड़ियाँ नहीं दे देते? क्या मेहमान सबकी सब खा जाएँगे? और यदि काकी ने मेहमानों के पहले खा लिया, तो क्या बिगड़ जाएगा? वह काकी के पास जाकर उन्हें धैर्य देना चाहती थी, परंतु माता के भय से न जाती थी। उसने अपने हिस्से की पूड़ियाँ नहीं खायी थीं। उसने पूड़ियाँ अपनी गुड़ियों की पिटारी में बंद कर रखी थीं। वह उन पूड़ियों को काकी के पास ले जाना चाहती थी। उसका हृदय अधीर हो रहा था। बूढ़ी काकी मेरी बात सुनते ही उठ बैठेंगी, पूड़ियाँ देखकर कैसी प्रसन्न होंगी। मुझे खूब प्यार करेंगी।'

इस उदाहरण द्वारा बेबस बालिका के हृदयस्थ प्रेम, काकी के प्रति उसकी चिंता, माँ-पिता के व्यवहार के प्रति मन में आक्रोश, काकी को पूड़ियाँ खिलाने का निश्चय एवं उसके अधीर मन की अकुलाहट सभी कुछ इसमें व्यंजित है। इसे प्रेमचंद के अतिरिक्त और कौन बयाँ कर सकता है?

चलचित्र के समान आँखों के सामने दिखाई पड़ने लगता है। ऐसे सशक्त चित्रांकन को इतने सरल 'कजाकी' कहानी में उसके प्रति अभिव्यक्त प्रेम, गुस्सा तथा अपने कारण उसके नौकरी से निकाले जाने का दु:ख और कष्ट की वेदना बालमन की निश्छल मनोवृत्ति को पाठकों के समक्ष खोलकर रख देती है। कठोर से कठोर हृदय वाला पाठक भी प्रेमचंद की कलम से नि:सृत इस वर्णन को पढ़ द्रवित हुए बिना

नहीं रह सकता। प्रेमचंद जी भलीभाँति समझते थे कि बालमन की यादें धुँधलाती नहीं। प्रेमचंद 'कजाकी' में इस तथ्य की ओर संकेत करते हुए कहते हैं, "मेरी बाल-स्मृतियों में 'कजाकी' एक न मिटने वाला व्यक्ति है। आज चालीस साल गुज़र गए, लेकिन कजाकी की मूर्ति अभी तक आँखों के सामने नाच रही है।"

'कजाकी' को नौकरी से निकाल देने पर दु:खी बालमन की झलक तो देखें–"खाना तो मैंने खा लिया–बच्चे शोक में खाना नहीं छोड़ते, खासकर जब रबड़ी भी सामने हो, मगर देर रात तक पड़े सोचता रहा–मेरे पास रुपये होते, तो एक लाख रुपये कजाकी को दे देता और कहता–बाबूजी से कभी मत बोलना बेचारा भूखों मर जाएगा। देखूँ, कल आता है या नहीं। अब क्या करेगा आकर? मगर आने को कह गया है। मैं कल उसे अपने साथ खाना खिलाऊँगा।" यहाँ यह बात सहज रूप से स्पष्ट हो जाती है कि बच्चे, हम बड़ों की तरह हिसाबी-किताबी नहीं होते। उनके सामर्थ्य में एक लाख रुपये ही क्यों यदि उनके पास साम्राज्य भी होता तो वे पल भर भी सोचे बिना पहले अपने 'कजाकी' जैसे प्रिय का कष्ट दूर करते फिर चैन की साँस लेते।

बालमन के चितेरे प्रेमचंद 'कजाकी' में ही कहते हैं –

'बच्चों का हृदय कितना कोमल होता है, इसका अनुमान दूसरा नहीं कर सकता। उनमें अपने भावों को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं होते। उन्हें यह भी ज्ञात नहीं होता कि कौन-सी बात उन्हें विकल कर रही है, कौन-सा काँटा उनके हृदय में खटक रहा है, क्यों बार-बार उन्हें रोना आता है, क्यों वे मन मारे बैठे रहते हैं, खेलने में जी नहीं लगता? मेरी भी यही दशा थी। कभी घर में आता, कभी बाहर जाता, कभी सड़क पर जा पहुँचता। आँखें कजाकी को ढूँढ रही थीं। वह कहाँ चला गया? कहीं भाग तो नहीं गया?'

रोष का हक तो जिससे प्यार होता है, उसी पर होता है। यह बात कमलगट्टे खाते बालमुख से कजाकी के लिए संदेश में मुखरित हो उठा है–'यह भी कह देना कि भैया ने बुलाया है। न जाओगे तो फिर तुमसे कभी न बोलेंगे, हाँ।'

उपर्युक्त कुछ उदाहरणों की बानगी यह दर्शाती है कि बालमन के चितेरे मुंशी प्रेमचंद के बाल हृदय को समझने की पारखी और पैनी दृष्टि से रंचमात्र भी ओझल नहीं हो पाता। ऐसी भावप्रवणता और प्रबलता की पकड़ और स्वच्छ एवं निर्मल जल की धारा के समान प्रवाहमान लेखनी से नि:सृत उद्‌गार पाठक को बालमन की अतल गहराइयों में डूब कुछ ग्रहण करने के लिए निरंतर प्रेरित करते हुए से प्रतीत होते हैं।

आज तेजी से दौड़ती जिंदगी में हम मानवीय अहसासों की दृष्टि से दिन-पर-दिन कंगाल होते जा रहे हैं और हर बात को सजग साहूकार की तरह नफे-नुकसान के मापदंड पर तौलते हैं। अच्छा हो कि हम बालमन की सुलभ और सरल भावनाओं को समझ अपनी मानवीय संवेदनाओं को मरने न दें।